Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02, No.05, December,2023
http://knowledgeableresearch.com/

संत काव्य और तत्कालीन समाज बोध

डा.बलवीर एवं डॉ श्रीकांत मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
स्वामी शुकदेवानंद कालेज शाहजहांपुर
Email:81balveer@gmail.com

****

सार : *आज के भारतीय समाज में धर्म तथा जाति-पाँति के नाम पर वोट की राजनीति करने वाले लोगों के कारण उन्माद, घृणा, द्वेष और साम्प्रदायिक दुराग्रहों और संकीर्णताओं का बोलबाला है। ऐसे समय में संतों तथा संतों के सिरमौर कबीर को याद करना आवश्यक हो जाता है। कबीर का आविर्भाव जिस समय में हुआ था, वह संक्रमण एवं उथल-पुथल का युग था।*

संकेत शब्द: *संत काव्य , तत्कालीन, परिस्थितियाँ ,व्यवस्था ,ऊहापोह*

****

संत-काव्य की प्रेरक परिस्थितियों के सम्बन्ध में डा. मैनेजर पाण्डे कहते हैं कि -''उस समय संस्कृति, वर्ग और विचार की अनेक तेज धारायें परस्पर टकरा रही थीं। एक ओर हिंदू समाज की भेदभाव पर आधारित जाति-व्यवस्था की संरचना थी, उस संरचना की शक्ति का स्रोत शास्त्रीय धर्म था। उस संरचना और धर्म के विरुद्ध विद्रोह करते हुए आगे आए बौद्ध, जैन, शाक्त, सिद्ध, नाथ आदि धर्म तथा मत। दूसरी ओर इस्लाम था। उसमें धार्मिक स्तर पर समानता के बावजूद उग्रता और सामाजिक विषमता व्याप्त थी। उसके विरुद्ध प्रेम की पीर का संदेश देने वाले सूफी संत थे। साधारण जनता इस भँवरजाल में फँसी हुई थी।''1 जिस प्रकार अग्नि सर्वत्र विद्यमान होती है उसी प्रकार प्रत्येक मानव में मानवीय गुण भी विद्यमान रहते हैं। जिस तरह अग्नि विशेष संयोग से अपना स्वरूप प्रकट कर संपूर्ण अंधकार से युद्ध की घोषणा कर देती है कुछ उसी प्रकार

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

मनुष्य के अंतस में व्याप्त यह दिव्य गुण परिस्थितिजन्य ही होते हैं या यों कहें कि व्यक्ति स्वतः कुछ नहीं होता वरन् उसे उठाने अथवा गिराने वाली परिस्थितियाँ ही होती हैं। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ बीज भी बिना उचित जल-वायु के अंकुरित नहीं होता कुछ इसी तरह संत-काव्य भी तत्कालीन परिस्थितियां की उपज है जिसके कारण संत-काव्य धारा संत-हृदय से निकलकर समाज को पावन बनाने हेतु साहित्य-त्रिवेणी में प्रवाहित हुई।

संतों के स्वभाव को स्पष्ट करते हुए तुलसीदास जी ने कहा है -

‘‘ निज परिताप द्रवइ नवनीता। पर दुःख द्रवहि संत सुपनीता।

संत-हृदय संतत सुखकारी। विश्व सुखद जिमि इंदु तमारी।।’’2

निश्चय ही संत हृदय की तुलना नवनीत से नहीं की जा सकती, वे तो पर संताप से ही द्रवीभूत हो जाते हैं। संतों का समाज में उदय ही विश्व-सुखद होता है। समाज की प्रत्येक घटना संत मन को दोलित करने लगती है वह पर उपकारी संत, समाज के हित निमित्त अपना जीवन अर्पित करने को सहर्ष प्रस्तुत हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप समाज में एक लहर उत्पन्न होती है जो पाखण्डवाद और छलावे के व्यवहार के मैले को बहाने का पूरजोर प्रयास करती है। संत की प्रमुख विशेषता ही यही होती है कि वह समाज के दुःख से इतना दुःखी हो जाता है कि स्वयं ही रो पड़ता है सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।

इतना ही नहीं संत समाज में अपने अनुभवों के माध्यम से ज्ञान की लहर लाने की जी-तोड़ कोशिश प्रारम्भ कर देते हं। ऐसे संत बिना किसी शर्त के समाज में दुःखी जनों के कल्याण के निमित्त अपनी मेधा-शक्ति को लगा देते हैं जिससे समाज को एक नया मार्ग मिलता है।

जिस प्रकार विश्व की सभी महान विभूतियाँ काल-प्रसूत होती हैं उसी प्रकार संतों के पीछे भी, उनके निर्माण में परिस्थितियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उनकी महानताएँ उनकी वाणी के द्वारा युगों-युगों तक जन-जीवन को जागृत करती रहती हैं तथा जाति, देश और राष्ट्र को भी प्रेरित करती रहती है।

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

संतों के समय में राजनैतिक अशांति, सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक ऊहापोह, आर्थिक विषमता, साहित्यिक अवमूल्यन तथा सांस्कृतिक अधोगति थी। उस युग में ऐसे महान संतों की आवश्यकता थी जिनका अवतरण तथाकथित अंत्यज वर्ग से उद्भत, भारत के उज्ज्वलतम नक्षत्र मध्यकालीन संतों के रूप में हुआ।

प्रायः सभी संत सत्यान्वेषी थे। यह सत्य उन्हें किसी वेद,पुराण, कुरान या गीता से नहीं मिला था। यह सत्य उनको अपने परिवेश तथा मानव जीवन के अनुभव से प्राप्त हुआ था। इस सत्य को कबीर ने 'अनभै साँचा' कहा है। इसकी व्याख्या करते हुए डाॅ. हजारीप्रसाद द्विवेदी जीने कहा था - 'अनभै साँचा का अर्थ है अनुभव का सत्य और अनभय का सत्य भी। असल में अनभय से पाया हुआ सत्य ही अनभय या निर्भय सत्य होता है, किसी से मिला हुआ सत्य नहीं।ष्2

संतों के समय और समाज में मनुष्य की पहचान के जो आधार थे, जो परम्परागत रूढ़ियाँ थीं... धर्म और जाति के नाम पर, उन सबको इन संतों ने एक झटके में नकार दिया। संतों के परिवेश को इंगित करते हुए मैनेजर पाण्डे जी कहते हैं - ''उस समय के समाज में मनुष्य की पहचान के दो आधार थे। एक था धर्म जिसके अनुसार प्रत्येक मनुष्य हिंदू या मुसलमान था। दूसरा आधार जाति भेद का था जिसके अनुसार मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र था। कबीर ने न तो किसी धर्म को अपनी पहचान का आधार माना और न किसी जाति को, उन्होंने केवल मनुष्य के रूप में अपनी पहचान को समाज के सामने रखा।'' अधिकतर संत आज की भाषा में निरक्षर थे। उन्होंने जो कुछ कहा वो संपूर्ण रूप में लिपिबद्ध नहीं किया जा सका। इन संतों की अशिक्षा हमें यह संकेत देती है कि उस समय एक विशेष वर्ग तक ही शिक्षा की व्यवस्था थी। निम्न ;साधारणद्ध वर्ग की शिक्षा-व्यवस्था तक पहुँच नहीं थी। उस व्यवस्था से ये सभी संत व्यथित थे। संत काव्य की प्रेरक परिस्थितियों का विधिवत् अध्ययन करने के लिए सामाजिक परिस्थितियों: पर विचार करना समीचीन है -

सर्वत्र ईश्वर की माया ;रचनाद्ध अपनी सुनहरी छटा बिखेर रही है। ईश्वर की स्पष्ट घोषणा है कि - 'सब मम प्रिय सब मम उपजाये। सब ते अधिक मनुज मोहि भाये।

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

दुनिया का यह अटल सत्य है कि हर चीज के निर्माण के पीछे उसकी परिस्थितियों का ही योगदान होता है। इसीलिए दुनिया का प्रत्येक कवि अपनी सामाजिक परिस्थिति से अवश्य प्रभावित होता है और उसी से उसे जीवनरूपी प्रेरणा भी मिलती है। हमारे संतों के निर्माण में भी सामाजिक परिस्थितियों का बहुत बड़ा योगदान है। चैदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी के काल को संतों के आविर्भाव का काल माना जाता है। उस समय के समाज में व्याप्त अन्याय एवं विषमता, जाति-पाँति, छुआ-छूत, टोना-टोटका आदि बाह्य आडम्बरों से समाज काफी व्यथित था।

उस समय का समाज वर्णाश्रम व्यवस्था में बँट चुका था। एक वर्ग विशेष को छोड़कर पूरा समाज वर्ग-वैषम्य की चक्की में पिस रहा था। पूरा समाज तरह-तरह के ढोंग-ढकोसलों, टोने-टोटके से तंग आ चुका था। समाज की अस्पृश्य समझी जाने वाली जनता कराह रही थी। उस समय निरंतर आक्रमण हो रहे थे जिससे सर्वाधिक कष्ट जनता को ही झेलना पड़ता था। मुसलमानों के रूप में जो नई जाति आई थी, जो पूर्ववर्ती आक्रांताओं से भिन्न थी। इसके पहले आने वाले आक्रमणकारियों में शक, हूण, मंगोल, गुर्जर आदि भारतीय वर्ण व्यवस्था में सम्मिलित हो गये थे। किंतु इस्लाम के रूप में एक ऐसी जाति भारत में आई जो किसी भी रूप में भारतीय समाज से मेल नहीं खाती थी। इस कारण भारतीय समाज में संक्रमण फैलने लगा। पूरे समाज में उथल-पुथल मच गई। दो भिन्न धर्म और संस्कृतियाँ आपस में टकराने लगीं। एक ओर हिंदू जनमानस जो कि जाति-व्यवस्था पर आधारित था, जिसका मत शास्त्रीय धर्म के निकट था, उसी के विरुद्ध बौद्ध, पंथ, शाक्त आदि धर्म समाज में फैल चुके थे। दूसरी ओर इस्लाम धर्म था जिसकी विचारधारा काफी उग्र थी। उसमें धार्मिक स्तर पर तो समानता थी परंतु उसमें भी सामाजिक स्तर पर काफी बुराइयाँ थीं। इस्लाम में ही एक तरफ सूफी मत था जो प्रेम की पीर का संदेश दे रहा था। पूरा समाज परस्पर संघर्षरत था जिस कारण समाज बद से बदतर होता जा रहा था। ऐसे परिवेश ने ही संतों की रचना कर डाली होगी।

यहाँ यह तर्क भी दिया जा सकता है कि यदि समाज की परिस्थितियाँ ही संत बनाती हैं तो सभी या अधिकतर लोग संत ही क्यों नहीं हो जाते? इस विषय में सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि जिस तरह हर वन में चंदन वृक्ष नहीं होते, न हर शैल में माणिक्य होता है और प्रत्येक गज में गजमुक्ता नहीं होती उसी तरह संत भी सभी जगह प्राप्त नहीं होते। समाज की

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

विसंगतियों से दुखित कुछ लोग ही उस समाज को पावन करने के लिए आगे आते हैं जिन्हें हम संत नाम से जानते चले आ रहे हैं।

भारतीय समाज सदैव धर्मप्राण रहा है लेकिन धर्म के विकृत होने से उपजने वाले संत्रास को भी भारतीय समाज ने भोगा है। इतिहास साक्षी है कि भारतीय समाज सदा से विविध रंगीय सभ्यताओं का केन्द्र रहा है। विश्व वन के भारतीय समाज की वाटिका में अनेकानेक पुष्पों ने अपनी सभ्यता की गंध फैलाई, लेकिन इन पुष्पों के साथ-साथ यहाँ काँटे भी आते रहे अर्थात् विविध सभ्यतायें, रीति-रिवाज, धर्म, आस्था, विश्वास वाले दुराग्रही लोगों के मध्य विवाद ने भी जन्म लिया। तत्कालीन भारतीय समाज में जो वर्ग सम्पन्न था वह विपन्न के लिए एक संकट ही था। उसके पास पेट पालने के लिए उचित साधन भी न था। साथ ही उसकी अस्मिता भी दाँव पर लगी हुई थी। जिन विजातीय तत्त्वों का आगमन हुआ वे सहज ग्राह्य नहीं थे। इस सम्बन्ध में डा. नगेन्द्र जी कहते हैं - ''मुसलमानों ने व्यावहारिक सम्बन्धों के भेद को प्रकट करने के लिए यहाँ के निवासियों को हिंदू कहा। इस शब्द का प्रथम उल्लेख विजयनगर के राजाओं के पन्द्रहवीं शताब्दी वाले शिलालेख में उपलब्ध हैं। इसके पूर्व कदाचित् इस शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है, ईरान के आकेमिनियन बादशाहों के अभिलेख में इन्द शब्द का प्रयोग अवश्य मिलता है, जो हिन्दु ;सुन्धुद्ध का ईरानी रूप जान पड़ता है।प्रारम्भ में इस्लाम भ्रातृभाव का संदेश लेकर चला था। उसका द्वार कुछ शर्तों पर सबके लिए खुला था। परंतु हिंदुओं के यहाँ धर्म परिवर्तन की शास्त्रीय व्यवस्था नहीं थी इसलिए उनके संस्कार इसके विपरीत पड़ते थे। इस बीच धर्म परिवर्तन के जो उदाहरण मिलते हैं वे धर्म प्रेरित न होकर बलात्कार के परिणाम थे। यद्यपि इसके पूर्व श्रमण-संस्कृतिके प्रचार-प्रसार काल में भी ऐसे प्रश्न उपस्थित हुए थे किंतु इसके उन्नायकों का विरोध कर्मकाण्डादि व्यावहारिक बातों से अधिक था, सैद्धांतिक प्रश्नों पर कम से कम विजातीय नहीं लगते थे। कर्मवाद और जन्मवाद में उनकी आस्था लगभग वैसी ही थी। अपनी कुलीनता की रक्षा की चिंता तत्कालीन हिंदुओं को अधिक सताने लगी थी और उसकी रक्षा के निमित्त वे स्मृतियों और टीकाओं का सहारा लेने लगे थे।''4 अर्थात् संतों के समय में समाज की स्थिति अत्यंत सोचनीय थी। चारों ओर विश्रंखलता, अव्यवस्था और अनुशासनहीनता का दौर था। मुगल-शासन सूत्र में जकड़ा हुआ भारतीय समाज पतन की ओर उन्मुख था। भक्ति का सामाजिक ढाँचा अशांति के बोझ से चरमरा रहा था। बाह्य

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

परिस्थितियाँ तो हिंदुओं के प्रतिकूल थी हीं, साथ ही हिंदुत्व की वे त्रुटियाँ जो परम्परा से चली आ रही थीं हिंदू मान्यताओं के विपरीत पड़ती थीं।

कुल मिलाकर हिंदू जनता विद्यर्मियों के अत्याचार से अत्यंत दुखी थी। इसके साथ ही साथ यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि तत्कालीन हिंदू समाज में वर्ण-धर्म इत्यादि का भी उचित पालन नहीं हो पा रहा था। यहाँ अनेकानेक जातियाँ और उपजातियाँ सामने आने लगी थीं। इतना ही नहीं इनमें भेद-भाव और ऊँच-नीच के कटु बीज भी फलित हो चुके थे। कुल मिला कर यह हिंदू समाज अनेक जटिलताओं और समस्याओं से ग्रसित हो गया था। इस तथ्य को उजागर करते हुए परशुराम चतुर्वेदी जी कहते हैं -''हिंदुत्व के धार्मिक नियमों का वास्तविक अभिप्राय दृष्टि से ओझल हो गया और समस्त हिंदू जाति केवल शब्दों की अनुगामिनी बन गई। जो नियम समाज में शांति, मर्यादा और व्यवस्था रखने के लिए बनाए गए थे, वे इस प्रकार समाज में वैषम्य और क्रूरता के विधायक बन गए। जीवन के कार्यक्रम के चुनाव में व्यक्तिगत प्रवृत्ति का प्रश्न ही न रहा। जिस धर्म में व्यक्ति विशेष ने जन्म पा लिया, उस वर्ण के निश्चित कार्यक्रम को छोड़कर और सब मार्ग उसके लिए सर्वदा के लिए बंद हो गए। उद्यम का विभाजन तथा कार्य व्यापार में कौशल प्राप्ति का उपाय न रहकर वर्ण-विभाग सामाजिक विभेद हो गया। जिसमें कोई ऊँच कोई नीच समझाजाने लगा। शूद्र जो नीचतम वर्ग में थे वे समाज के सब अधिकारों से वंचित रह गए। वेद और धर्मशास्त्रों के अध्ययन का उन्हें अधिकार न था। उनमें से अंत्यजों के लिए तो देवदर्शन के लिए मंदिर-प्रवेश तक निषिद्ध था। उनका स्पर्श तक अपवित्र समझा जाता था।''5 उपरोक्त विद्वान ने तत्कालीन समाज की जो स्थिति बताई है उससे जो हिंदू धर्म का अस्पृश्य समझा जाने वाला वर्ग इस्लाम की तरफ आकर्षित हुआ। उसने धर्म परिवर्तन कर लिया किंतु हिंदू धर्म से मुस्लिम धर्म अपनाने वाले लोगों के संस्कार पूर्ण रूप से बदले नहीं थे। उनके अंतःकरण में अपने पुराने धर्म के संस्कार विद्यमान थे। क्योंकि वे या तो स्वार्थवश इस धर्म को अपनाए हुए थे या बलात् उन पर मुस्लिम धर्म थोप दिया गया था।

समय यथावत् चलता रहा और आक्रमण करने वाले मुस्लिम वंशजों में भी कालान्तर में मैत्री, सद्भावना और प्रेम के गुण उपजने लगे थे जो सूफी साधकों के मूल मंत्र हैं।

उन दिनों इस्लाम-प्रचार की यह विशेषता बन गई थी कि तलवार द्वारा आतंक उत्पन्न करने के बाद प्रेम की पट्टी बाँध दी जाए। उस समय सुल्तान सर्वोपरि था। उसके बाद उलेमा और उमरा का स्थान आता था। इनमें से द्वितीय वर्ग के

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

अंतर्गत ईरान, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान तथा अरब के मूल निवासियों के नाम लिए जा सकते हैं जिन्हें क्रमशः शेख, मुगल, पठान और सैयद की संज्ञा दी जाने लगी थी। इन्हें अपने से बाहर वालों से सम्बन्ध स्थापित करना स्वीकार न था। शेख अपने पांडित्य और सुसंस्कृति के लिए प्रसिद्ध थे। वहीं संत-काव्य की सामाजिक परिस्थिति के सम्बन्ध में डा. रधिका प्रसाद त्रिपाठी जी लिखते हैं -'' नव भक्ति की धारा विविध अवरोधों को तोड़ती हुई दक्षिण से उत्तर भारत में आकर प्रतिष्ठित हुई। तब यहाँ की सामाजिक और राजनैतिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। समाज में वर्णाश्रम विकृति से उत्पन्न जाति व्यवस्थागत दुर्गुण घर कर गए थे। ऊँच-नीच और छुआछूत की भावना अत्यधिक बढ़ गई थी। सामंतीय जीवन 'कंचन' और 'कामिनी' की मोहकता का शिकार हो गया था। बहिर्जगत आत्यंतिक सुख और सत्य का आधार बन गया था। ऐसे ही समय में यवन आक्रमणकारी एक हाथ में तलवार और दूसरे में कुरान लेकर पूरे देश में छा गए। फलतः भोग में आकंठ डूबे हुए सामंतों का ऐश्वर्य लुट गया। श्रद्धालुओं की आँखों के सम्मुख मंदिर धराशाई किए जाने लगे। देव-विग्रह खण्डित किए जाने लगे। धार्मिक और सामाजिक धरातल पर चोटी-बेटी का संकट उत्पन्न हो गया।''6 अर्थात् उस समय के समाज में प्रजा के रहन-सहन का स्तर अत्यंत निम्नकोटि का था। बेचारी जनता तरह-तरह के करोंके भार को ढो रही थी। वहीं वह जनता अंधविश्वासों में भी पूरी तरह जकड़ी हुई थी।

तत्कालीन समाज अंधविश्वासों से परिपूर्ण था। एक ओर देवताओं की प्रसन्नता के लिए बलि दी जाती थी तो दूसरी ओर जन्नत प्राप्ति के लिए युद्ध किए जाते थे। आर्थिक वैषम्य सर्वत्र विद्यमान था। मध्ययुगीन समाज में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय थी। वह सिर्फ भोग की वस्तु समझी जाती थी। नित्य ही सुंदर दिव्यांगनाओं के लिए युद्धों का आयोजन होता रहता था। अपनी अस्मिता को बचाने के लिए समाज में बाल विवाह का प्रचलन हो गया था। वहीं दूसरी ओर सती-प्रथा का भी प्रारम्भ हो गया था। सुरा और संदरी का दौर चला करता था। मद्यपान, पायलकी झंकारों ने विलासी व्यक्तियों को और भी प्रोत्साहन दिया जिससे तत्कालीन नारी वर्ग केवल भोग्या बनकर रह गया था। तत्कालीन सामाजिक शक्ति विभिन्न जातियों में विभक्त होकर कमजोर हो गई थी। प्रथाओं, रीति-रिवाजों आदि सामाजिक समस्यायें और भी जटिल बन गई थीं। हिंदू एवं मुसलमान दोनों धर्मों का पालन नहीं हो पाता था। फलस्वरूप जातियों-उपजातियों की संख्या में वृद्धि हो गई थी और उनकी पारस्परिक व्यवहार में आत्मीयता नहीं रह गई थी। वर्ण-व्यवस्था में आस्था न रखने वालों में भी किसी न किसी प्रकार का आपसी भेद-भाव बना हुअ था। इब्नबतूता के अनुसार इन दिनों दास प्रथा भी प्रचलित थी। हिंदू कन्याओं को संपन्न मुसलमान

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

अधिकाधिक संख्या में क्रय करके अपने घरों में रख लिया करते थे। कुलीन नारियों का अपहरण करके अमीर लोग अपना मनोरंजन किया करते थे। मुहम्मद बिन तुगलक ने चीन के सम्राट के पास भारतीय काफिरों में से एक-एक सौ स्त्री-पुरुषों को सौगात के रूप में भेजा था। इसके साथ ही ऐसे हिंदू राजाओं का भी अभाव न था जो मुस्लिम महिलाओं, विशेषतः सैयद स्त्रियों को दासी-रूप में अपने यहाँ लाकर नृत्य-गीत की शिक्षा दिलवाया करते थे। ... छुआछूत के नियम इतने कठोर थे कि शूद्रादि जातियों तक में परस्पर भेद-भाव बरता जाने लगा था।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि संतों के समय की तत्कालीन परिस्थितियाँ समाज के अनुकूल नहीं थीं। पूरा समाज आपस में संघर्षरत था। एक ओर हिंदू धर्म अनेक जातियों-उपजातियों, ऊँच-नीच, छुआ-छूत, बाह्याडम्बरों तथा अनेक वर्गों में बँट चुका था। वहीं मुसलमानों में भी समानता की भावना अधिक समय तक टिकी न रह सकी। पूरे भारतीय समाज में अमीर-गरीब की खाई बहुत बढ़ गई थी। महिलाओं की दशा अत्यंत सोचनीय थी। उन्हें जानवरों की तरह क्रय-विक्रय किया जाता था। उन्हें सिर्फ विलासिता की वस्तु समझा जाता था। समाज में एक विशेष वर्ग के अतिरिक्त शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। निरंतर युद्धों के चलते किसानों की फसलें चैपट हो जाया करती थीं। जो फसलें बचती थी उन पर इतना कर लिया जाता था कि बेचारा किसान जिसे अन्नदाता कहते हैं एक भिखारी से भी ज्यादा बुरे हाल में था। समाज की आर्थिक स्थिति बद से बदतर हो चुकी थी। रही सही कसर समाज का ढोंगी पंडित और मौलवी पूरी कर देता था। वह अब भी धर्म के नाम पर हिंदू और मुसलमानों दोनों का शोषण कर रहा था।

अर्थात् समाज मं कई धर्म सम्प्रदाय प्रचलित थे जिनसे जनता त्रस्त थी। इस सबसे निजात पाने के लिए प्रभु की शरण में जाने के सिवाय और कोई रास्ता न रह गया था। समाज का ऐसा रूप संतों के लिए बीजरूप साबित हुआ जिसका अंकुरण संतों के रूप में हुआ। इस बिंदु पर आकर हम कह सकते हैं कि संत-काव्य को समाज से ऐसी परिस्थितियां प्राप्त हुईं जिनसे संतों का उदय होना निश्चित था।

इस सम्बन्ध में गोस्वामी तुलसीदास जी की 'कवितावली' की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं जिनका उल्लेख डा. नगेन्द्र ने भी अपने इतिहास में किया है, में तत्कालीन स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है -

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.05, December, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

''खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भली।
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीधमान सोच बस,
कहैं एक एकन सो कहाँ जाई, का करी।।''7

और अंत में डा. जयदेव एवं डा. वासुदेव सिंह के विचार प्रस्तुत हैं -''सामाजिक दृष्टि से यह न्याय और समता का आंदोलन है। यह वर्णाश्रम व्यवस्था में पिसती, ऊँच-नीच की भेद-भावना में कराहती तथाकथित अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों का आंदोलन है जो वर्ग वैषम्य के अन्यायपूर्ण जुए को उतार कर फेंकने के लिए व्याकुल हो रही थीं।'' 8

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि संत-काव्य की प्रेरक परिस्थितियाँ तत्कालीन समाजमें ही व्याप्त थीं, जो कि दोनों धर्मों के संघर्ष तथा पहले से चले आ रहे अनेक धर्म-धर्मांतरों की उपज प्रतीत होती है। समाज में व्याप्त तत्कालीन विसंगतियों का सामना करने के लिए एक समन्वयात्मक धर्म की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति कबीर आदि संतों के आविर्भाव से हुई।

सन्दर्भ:

1. मैनेजर पाण्डे सम्पादित ;नामवर सिंहद्ध आलोचना पत्रिका ;त्रैमासिक सन् 2000, पृ0 275
2. गोस्वामी तुलसीदास, रामचरित मानस, पृ0 668
3. मैनेजर पाण्डे सम्पादित ;नामवर सिंहद्ध आलोचना पत्रिका ;त्रैमासिक, पृ0 276
4. डा. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ0 111
5. डा. बड़थ्वाल, सम्पादक ;डा. भगीरथ मिश्र, हिंदी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, पृ07
6. डा. राधिका प्रसाद त्रिपाठी, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ0 87
7. डा. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ0 112
8. डा. जयदेव एवं डा. वासुदेव सिंह, कबीर वाणी पीयूष, पृ0 3

डा.बलवीर एवं डॉ श्रीकांत मिश्रा

Received Date: 21.12.2023
Publication Date: 30.12.2023